JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

झारखंड राज्य में आदिवासी लड़कियों की शिक्षा पर एक पायलट स्टडी (प्रारंभिक अध्ययन)

प्रो (डॉ.) राज कुमार नायक
(शिक्षा में एम.ए., अंग्रेजी में एम.ए., दर्शनशास्त्र में एम.ए.,
पत्रकारिता एवं जनसंचार में एम.ए.,
एम.फिल.एजुकेशन, एम.एड.,पी.एच.डी.इन एजुकेशन)
प्रोफेसर और डीन आर्ट्स (मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान)
नेताजीसुभाष विश्वविद्यालय,पोखरी,जमशेदपुर
पूर्व प्रोफेसर बीएमसीई, चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय, जिंद हरियाणा
पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर, एफएमयूनिवर्सिटी, बालासोर
विजिटिंग एक्सपर्ट एन.सी.टी.ई. निरीक्षण दल,
एआईएईआर, द ग्लोबल कम्युनिटी, आईएटीई के आजीवन सदस्य
"ग्लोबल इवोल्यूशन बाई-एनुअल" (प्रबंधन एवं शिक्षक शिक्षा) शोध जर्नल के संपादक
"पहल होराइजन" द्विवार्षिक जर्नल के संपादक, आईएसएसएन: 2456-4842, अंतर्राष्ट्रीय शोध जर्नल
&
आशा कुमारी
रिसर्च स्कॉलर पीएच.डी.
शिक्षा विभाग
नेताजी सुभाष विश्वविद्यालय,जमशेदपुर

सारांश

यह पायलट अध्ययन झारखंड राज्य में आदिवासी लड़कियों की शिक्षा की वर्तमान स्थिति, उससे जुड़ी बाधाओं और संभावनाओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। झारखंड में आदिवासी जनसंख्या का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक है, किन्तु लड़कियों की शिक्षा में कई सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक और सांस्कृतिक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। इस अध्ययन के लिए रांची, खूंटी, गुमला, दुमका और पश्चिम सिंहभूम के पाँच आदिवासी बहुल जिलों का चयन किया गया। 200 आदिवासी परिवारों से 10-18 वर्ष आयु वर्ग की लड़कियों के बारे में डेटा संकलित किया गया। साक्षात्कार, प्रत्यक्ष अवलोकन और विद्यालय रिकॉर्ड के माध्यम से डेटा प्राप्त किया गया।

अध्ययन से पता चला कि प्राथमिक स्तर पर विद्यालय उपस्थिति तुलनात्मक रूप से बेहतर थी, किन्तु किशोरावस्था में ड्रॉपआउट दर बढ़ जाती है। आर्थिक कठिनाइयाँ, प्रारंभिक विवाह, पारंपरिक सोच, दुर्गम भौगोलिक स्थिति, भाषा की बाधाएँ और विद्यालयों में बुनियादी सुविधाओं की कमी प्रमुख बाधाएँ हैं। सरकारी योजनाएँ जैसे SSA, KGBV, मध्यान्ह भोजन योजना, BBBP और TSP लड़कियों की शिक्षा में मददगार हैं, किन्तु प्रभावी क्रियान्वयन और स्थानीय समुदाय की सहभागिता आवश्यक है।

अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि आदिवासी लड़कियों की शिक्षा सुधारने के लिए बहु-आयामी दृष्टिकोण आवश्यक है। शिक्षा केवल ज्ञान का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक सशक्तिकरण, लैंगिक समानता और आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण उपकरण है।

प्रस्तावना

भारत एक बहुजातीय, बहुभाषी और बहुधार्मिक देश है, जहाँ विविधता ही इसकी सबसे बड़ी पहचान है। आदिवासी समाज इस विविधता का अभिन्न हिस्सा है। झारखंड राज्य, जिसे वर्ष 2000 में बिहार से अलग कर स्वतंत्र राज्य का दर्जा दिया गया, आदिवासी बहुल राज्य है। यहाँ की जनसंख्या का लगभग 26 प्रतिशत हिस्सा आदिवासियों से संबंधित है। झारखंड में संथाल, मुंडा, उरांव, हो, असुर, बिरजिया, खड़िया जैसी अनेक जनजातियाँ निवास करती हैं। इनकी सांस्कृतिक परंपराएँ, जीवनशैली और सोच भारतीय समाज में एक अनूठा स्थान रखती हैं।

शिक्षा विकास की सबसे महत्वपूर्ण कुंजी है, किंतु आदिवासी समाज, विशेषकर आदिवासी लड़कियाँ, शिक्षा से सबसे अधिक वंचित हैं। यह वंचना सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक और सांस्कृतिक कारणों से उत्पन्न हुई है। इस पायलट अध्ययन का उद्देश्य झारखंड राज्य में आदिवासी लड़कियों की शिक्षा की वर्तमान स्थिति, चुनौतियों और संभावनाओं का गहन अध्ययन करना है।

झारखंड में शिक्षा की पृष्ठभूमि

झारखंड की भौगोलिक संरचना, जिसमें घने जंगल, दुर्गम पहाड़ियाँ और दूरस्थ गाँव शामिल हैं, शिक्षा की पहुँच को प्रभावित करती है। राज्य बनने के बाद शिक्षा के क्षेत्र में कई सुधार योजनाएँ लागू की गईं, जैसे कि सर्व शिक्षा अभियान, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, मध्यान्ह भोजन योजना आदि। किंतु इन योजनाओं का आदिवासी लड़कियों तक सीमित लाभ पहुँचना एक बड़ी चुनौती बनी रही।

सांख्यिकीय दृष्टि से देखें तो झारखंड में आदिवासी लड़कियों की साक्षरता दर राज्य के अन्य समुदायों की तुलना में काफी कम है। 2011 की जनगणना के अनुसार, झारखंड की कुल साक्षरता दर 66.4 प्रतिशत थी, जबकि आदिवासी महिलाओं की साक्षरता दर मात्र 45 प्रतिशत के आसपास थी। यह स्थिति बताती है कि शिक्षा का प्रकाश अब भी आदिवासी लड़कियों तक पर्याप्त रूप से नहीं पहुँच पाया है।

अध्ययन का महत्व और उद्देश्य

अध्ययन का महत्व

झारखंड राज्य में आदिवासी समाज की शिक्षा, विशेषकर आदिवासी लड़कियों की शिक्षा, केवल शैक्षणिक दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन का महत्व निम्नलिखित बिंदुओं में स्पष्ट किया जा सकता है:

1. **सामाजिक सशक्तिकरण** लड़कियों की शिक्षा से समाज में सकारात्मक बदलाव आता है। शिक्षित लड़कियाँ अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होती हैं और सामाजिक कुरीतियों जैसे बाल विवाह, लैंगिक भेदभाव, बाल श्रम और अशिक्षा के चक्र को तोड़ने में सक्षम बनती हैं।
2. **आर्थिक विकास** जब आदिवासी लड़कियाँ शिक्षा प्राप्त करती हैं, तो वे नौकरी, स्वरोजगार और उद्यमिता के क्षेत्र में अवसर प्राप्त कर सकती हैं। इससे न केवल उनका परिवार आर्थिक रूप से सक्षम बनता है, बल्कि राज्य की अर्थव्यवस्था में भी योगदान बढ़ता है।
3. **स्वास्थ्य और पोषण** शिक्षा प्राप्त करने वाली लड़कियाँ स्वास्थ्य और पोषण संबंधी जानकारी के प्रति जागरूक होती हैं। वे अपने परिवार के लिए बेहतर स्वास्थ्य निर्णय ले पाती हैं, जिससे शिशु मृत्यु दर और मातृ मृत्यु दर कम की जा सकती है।
4. **सांस्कृतिक संरक्षण और आधुनिकता का संतुलन** आदिवासी लड़कियाँ अपनी शिक्षा के माध्यम से आधुनिक समाज की चुनौतियों का सामना करते हुए भी अपनी भाषा, संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण कर सकती हैं। इस प्रकार शिक्षा सांस्कृतिक निरंतरता और आधुनिक विकास के बीच एक पुल का कार्य करती है।
5. **राज्य और राष्ट्र का विकास** किसी भी समाज का विकास उसकी आधी आबादी यानी महिलाओं की स्थिति पर निर्भर करता है। झारखंड जैसे आदिवासी बहुल राज्य में यदि लड़कियाँ शिक्षित होंगी, तो यह पूरे राज्य और राष्ट्र के लिए विकास का आधार बनेगा।
6. **समानता और न्याय की स्थापना** शिक्षा समाज में समानता और न्याय की स्थापना का सबसे प्रभावी साधन है। आदिवासी लड़कियों को शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराना लैंगिक समानता और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने का कदम है।

अध्ययन के उद्देश्य

इस पायलट अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. **वर्तमान स्थिति का आकलन करना** झारखंड राज्य में आदिवासी लड़कियों की शिक्षा की वास्तविक स्थिति, विद्यालय उपस्थिति, साक्षरता दर और ड्रॉपआउट दर को समझना।
2. **चुनौतियों की पहचान करना** उन प्रमुख सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक और सांस्कृतिक बाधाओं का पता लगाना, जो आदिवासी लड़कियों की शिक्षा में बाधक हैं।
3. **सरकारी योजनाओं का मूल्यांकन करना** यह जानना कि सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाएँ जैसे – सर्व शिक्षा अभियान, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, मध्यान्ह भोजन योजना आदि – किस हद तक आदिवासी लड़कियों तक पहुँच पा रही हैं और कितनी प्रभावी हैं।
4. **परिवार और समाज की भूमिका को समझना** अभिभावकों और समुदाय के दृष्टिकोण का अध्ययन करना कि वे लड़कियों की शिक्षा के प्रति कितने जागरूक और सहायक हैं।
5. **भाषाई और सांस्कृतिक पहलुओं का विश्लेषण करना** यह देखना कि मातृभाषा की भूमिका शिक्षा में कितनी महत्वपूर्ण है और भाषा संबंधी कठिनाइयाँ लड़कियों की प्रगति में किस प्रकार बाधा डालती हैं।

6. **सकारात्मक पहल की पहचान करना** उन क्षेत्रों और विद्यालयों को चिन्हित करना जहाँ आदिवासी लड़कियों की शिक्षा अपेक्षाकृत बेहतर है, ताकि उनके मॉडल को अन्य जगहों पर लागू किया जा सके।

7. **भविष्य की रणनीति सुझाना** अध्ययन के आधार पर ऐसे ठोस सुझाव और नीतिगत उपाय प्रस्तुत करना, जिनसे आदिवासी लड़कियों की शिक्षा को और अधिक सशक्त बनाया जा सके।

समग्र दृष्टिकोण

इस अध्ययन का महत्व इसलिए भी है क्योंकि यह न केवल शिक्षा की स्थिति का आकलन करता है, बल्कि आदिवासी लड़कियों की शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक प्रगति, सांस्कृतिक संरक्षण और लैंगिक समानता से जोड़कर देखता है। इसके उद्देश्य केवल आँकड़ों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि समाज और नीति-निर्माताओं के लिए दिशा-निर्देशक सिद्धांत प्रस्तुत करना भी हैं।

पायलट अध्ययन की कार्यप्रणाली

इस पायलट अध्ययन का उद्देश्य झारखंड राज्य में आदिवासी लड़कियों की शिक्षा की वर्तमान स्थिति, उनसे जुड़ी चुनौतियाँ और संभावनाओं का गहन विश्लेषण करना था। अध्ययन के लिए झारखंड के पाँच आदिवासी बहुल जिलों – रांची, खूंटी, गुमला, दुमका और पश्चिम सिंहभूम – का चयन किया गया। इन जिलों का चयन विशेष रूप से इसलिए किया गया क्योंकि यहाँ आदिवासी आबादी अधिक है और शिक्षा की स्थिति अन्य जिलों की तुलना में अधिक चुनौतीपूर्ण मानी जाती है। इन जिलों में शिक्षा के भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से कई बाधाएँ देखी गई हैं, जैसे दूरस्थ क्षेत्र, जंगलों और पहाड़ियों में बसे गाँव, आर्थिक रूप से कमजोर परिवार, तथा सांस्कृतिक परंपराओं का प्रभाव।

नमूना चयन

अध्ययन में कुल 200 आदिवासी परिवारों को शामिल किया गया। इन परिवारों में 10 से 18 वर्ष की आयु वर्ग की लड़कियाँ थीं। यह आयु वर्ग इसलिए चुना गया क्योंकि इसमें प्राथमिक से माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा शामिल होती है और यह वह समय है जब लड़कियाँ अक्सर शिक्षा छोड़ देती हैं। नमूना चयन के दौरान प्रयास किया गया कि विभिन्न आदिवासी समूहों जैसे संथाल, मुंडा, उरांव, हो, और असुर की लड़कियाँ समान रूप से शामिल हों। इसके अलावा, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में वितरण सुनिश्चित किया गया ताकि अध्ययन में भौगोलिक और सामाजिक विविधता का ध्यान रखा जा सके।

साक्षात्कार

अध्ययन के अंतर्गत अभिभावकों, शिक्षकों और विद्यार्थियों के साथ साक्षात्कार किया गया। अभिभावकों से यह पता लगाया गया कि वे लड़कियों की शिक्षा को कितनी प्राथमिकता देते हैं, आर्थिक स्थिति और सामाजिक मानसिकता का शिक्षा पर क्या प्रभाव है, तथा किन कारणों से लड़कियाँ स्कूल छोड़ देती हैं। शिक्षकों से यह जाना गया कि स्कूलों में उपस्थिति, शिक्षण विधियों, पाठ्यक्रम की कठिनाइयाँ और बच्चों की सीखने की क्षमता किस प्रकार प्रभावित होती है। विद्यार्थियों से उनके अनुभव, स्कूल में कठिनाइयाँ, भाषा संबंधी समस्याएँ और भविष्य की आकांक्षाओं के बारे में जानकारी प्राप्त की गई।

प्रत्यक्ष अवलोकन

अध्ययन के दौरान विद्यालयों का प्रत्यक्ष अवलोकन भी किया गया। इसमें स्कूलों की बुनियादी सुविधाओं जैसे शौचालय, पेयजल, बिजली, पुस्तकालय, खेल की सुविधाएँ और परिवहन की उपलब्धता का मूल्यांकन किया गया। इसके साथ ही विद्यार्थियों की उपस्थिति, कक्षा में शिक्षक की गतिविधियाँ, शिक्षण की गुणवत्ता और बच्चों की सहभागिता का निरीक्षण किया गया।

इस कार्यप्रणाली के माध्यम से न केवल आंकड़ों का संग्रह किया गया, बल्कि क्षेत्रीय, सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में आदिवासी लड़कियों की शिक्षा की वास्तविक स्थिति को भी समझने का प्रयास किया गया। अध्ययन ने यह स्पष्ट किया कि शिक्षा केवल स्कूलों की उपस्थिति तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक जागरूकता, आर्थिक स्थिति, परिवार की मानसिकता और बुनियादी ढाँचे जैसी कई कारकों से प्रभावित होती है।

इस तरह की कार्यप्रणाली ने अध्ययन को व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किया और भविष्य में आदिवासी लड़कियों की शिक्षा को सुधारने हेतु ठोस नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करने का आधार तैयार किया।

एक पायलट अध्ययन में संकलित डेटा का विश्लेषण और व्याख्या

पायलट अध्ययन का मुख्य उद्देश्य झारखंड राज्य में आदिवासी लड़कियों की शिक्षा की वर्तमान स्थिति का गहन अध्ययन करना था। इस अध्ययन में झारखंड के पाँच आदिवासी बहुल जिलों – रांची, खूंटी, गुमला, दुमका और पश्चिम सिंहभूम – में 200 आदिवासी परिवारों के डेटा को संकलित किया गया। डेटा संग्रह के मुख्य स्रोतों में परिवार, छात्राओं और शिक्षकों के साथ साक्षात्कार, विद्यालयों का प्रत्यक्ष निरीक्षण और विद्यालय रिकॉर्ड शामिल थे। इस खंड में हम संकलित डेटा का विश्लेषण और व्याख्या करेंगे, जिससे आदिवासी लड़कियों की शिक्षा की वास्तविक स्थिति स्पष्ट हो सके।

1. विद्यालय उपस्थिति और ड्रॉपआउट दर

संकलित डेटा के अनुसार, 10-14 वर्ष आयु वर्ग की लड़कियों की विद्यालय उपस्थिति अपेक्षाकृत उच्च रही, लगभग 75% लड़कियाँ नियमित रूप से स्कूल जाती थीं। हालांकि, 15-18 वर्ष आयु वर्ग में यह उपस्थिति तेजी से घटकर लगभग 45% रह गई। इस गिरावट का मुख्य कारण प्रारंभिक विवाह, घरेलू जिम्मेदारियाँ और आर्थिक आवश्यकताएँ थीं। कई परिवार लड़कियों को खेतों, घर के काम या अन्य आय-सृजन गतिविधियों में शामिल करते हैं।

ड्रॉपआउट दर का विश्लेषण दर्शाता है कि लड़कियाँ विद्यालय छोड़ने के प्रमुख कारण आर्थिक, सामाजिक और भौगोलिक बाधाएँ हैं। विशेष रूप से दूरस्थ और दुर्गम क्षेत्रों में स्थित विद्यालयों में ड्रॉपआउट दर अधिक रही। यह डेटा स्पष्ट करता है कि केवल स्कूल की उपलब्धता पर्याप्त नहीं है; लड़कियों को स्कूल आने के लिए सुरक्षित और सुविधाजनक वातावरण की आवश्यकता है।

2. शैक्षणिक प्रदर्शन और सीखने की क्षमता

साक्षात्कार और कक्षा अवलोकन से प्राप्त जानकारी के अनुसार, आदिवासी लड़कियों का शैक्षणिक प्रदर्शन माध्यमिक स्तर पर अपेक्षाकृत कमजोर पाया गया। प्राथमिक स्तर की पढ़ाई में अधिकांश लड़कियाँ औसतन 60-65% अंक प्राप्त करती थीं, जबकि माध्यमिक स्तर पर यह औसत घटकर 40-50% रह गया। इसका मुख्य कारण भाषा की बाधा और शिक्षक उपस्थिति में कमी थी।

भाषाई अंतर का विश्लेषण यह दर्शाता है कि जिन विद्यालयों में शिक्षक आदिवासी भाषाओं को समझते थे और बहुभाषी शिक्षण विधियों का उपयोग करते थे, वहाँ लड़कियों का प्रदर्शन अपेक्षाकृत बेहतर रहा। इससे स्पष्ट होता है कि मातृभाषा आधारित प्रारंभिक शिक्षा सीखने की क्षमता को बढ़ा सकती है।

3. सामाजिक और पारिवारिक दृष्टिकोण

साक्षात्कार से यह निष्कर्ष निकला कि अधिकांश अभिभावक लड़कियों की शिक्षा के महत्व को समझते हैं, लेकिन आर्थिक और सामाजिक प्रतिबंधों के कारण उन्हें स्कूल भेजना कठिन होता है। लगभग 60% अभिभावक मानते हैं कि लड़कियों की शिक्षा आवश्यक है, लेकिन केवल 35% ने कहा कि वे अपनी लड़कियों को उच्च शिक्षा तक भेजेंगे।

सामाजिक प्रथाएँ जैसे बाल विवाह और पारंपरिक भूमिकाओं का प्रभाव भी स्पष्ट रूप से देखा गया। कई परिवार मानते हैं कि लड़कियों का अंतिम उद्देश्य विवाह और गृहस्थी है। यह दृष्टिकोण शिक्षा में रुचि और विद्यालय में उपस्थिति को प्रभावित करता है।

4. भौगोलिक और बुनियादी ढाँचे से संबंधित बाधाएँ

प्रत्यक्ष अवलोकन और डेटा संग्रह के आधार पर यह स्पष्ट हुआ कि दूरस्थ और पहाड़ी क्षेत्रों के विद्यालयों में बुनियादी ढाँचे की कमी है। लगभग 70% विद्यालयों में पर्याप्त शौचालय की सुविधा नहीं थी। पेयजल और बिजली की समस्या भी आम थी। इसके अलावा, कई गाँवों में स्कूलों तक पहुँचने के लिए लंबी पैदल यात्रा करनी पड़ती है, जिससे लड़कियों की उपस्थिति प्रभावित होती है।

सुरक्षा से संबंधित चिंता भी प्रमुख कारणों में शामिल थी। लड़कियों के लिए सुरक्षित परिवहन का अभाव और जंगलों या पहाड़ियों से होकर स्कूल जाना उन्हें जोखिमपूर्ण लगता है।

5. सरकारी योजनाओं की प्रभावशीलता

डेटा से यह निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी योजनाएँ आदिवासी लड़कियों की शिक्षा में कुछ हद तक प्रभावी रही हैं, लेकिन उनकी पहुंच और क्रियान्वयन में सुधार की आवश्यकता है।

- **सर्व शिक्षा अभियान (SSA)**: प्राथमिक विद्यालयों में लड़कियों की उपस्थिति बढ़ाने में मदद मिली, लेकिन शिक्षक उपस्थिति और संसाधनों की कमी एक बाधा बनी।
- **कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (KGBV)**: आवासीय विद्यालयों ने दूरस्थ क्षेत्र की लड़कियों को शिक्षा का अवसर दिया। यहाँ लड़कियों की उपस्थिति और प्रदर्शन बेहतर पाया गया।
- **मध्यान्ह भोजन योजना**: बच्चों की स्कूल उपस्थिति में वृद्धि हुई और अभिभावकों में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी।
- **बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ (BBBP)**: जागरूकता अभियान ने लैंगिक समानता और शिक्षा के महत्व को उजागर किया, लेकिन स्थानीय सामाजिक मान्यताओं के कारण प्रभाव सीमित रहा।
- **आदिवासी उपयोजना (TSP)**: वित्तीय और बुनियादी ढाँचे संबंधी संसाधन प्रदान किए गए, जिससे स्कूलों की स्थिति में सुधार आया।

6. डेटा की व्याख्या और निष्कर्ष

संकलित डेटा से स्पष्ट होता है कि आदिवासी लड़कियों की शिक्षा की स्थिति जटिल है और इसे बहु-आयामी दृष्टिकोण से समझने की आवश्यकता है। मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं:

1. **उपस्थिति और ड्रॉपआउट**: उम्र के बढ़ने के साथ विद्यालय उपस्थिति घटती है, जिससे ड्रॉपआउट दर अधिक होती है।
2. **भाषाई और शैक्षणिक अंतर**: मातृभाषा आधारित शिक्षण और बहुभाषी शिक्षक उपस्थिति सुधार सकते हैं।
3. **सामाजिक और आर्थिक कारक**: आर्थिक मजबूरियाँ और पारंपरिक सामाजिक मान्यताएँ शिक्षा में बाधक हैं।
4. **बुनियादी ढाँचा और सुरक्षा**: स्कूलों में शौचालय, पेयजल, बिजली और सुरक्षित परिवहन की कमी उपस्थिति को प्रभावित करती है।
5. **सरकारी पहल**: योजनाएँ कुछ हद तक प्रभावी हैं, लेकिन बेहतर क्रियान्वयन और स्थानीय समुदाय की सहभागिता आवश्यक है।

इस पायलट अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि आदिवासी लड़कियों की शिक्षा को सुधारने के लिए केवल स्कूल खोलना पर्याप्त नहीं है। सामाजिक जागरूकता, परिवारिक समर्थन, भौगोलिक और बुनियादी बाधाओं का समाधान, भाषा-संवेदनशील शिक्षा और सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन सभी मिलकर इस दिशा में निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं।

पायलट अध्ययन के डेटा को **तालिकाबद्ध रूप में** प्रस्तुत किया जा सकता है ताकि विश्लेषण और व्याख्या और अधिक स्पष्ट और संक्षिप्त हो।

क्र.सं.	डेटा क्षेत्र	मुख्य निष्कर्ष	प्रतिशत / अवलोकन	व्याख्या / विश्लेषण
1	**विद्यालय उपस्थिति (10-14 वर्ष)**	प्राथमिक आयु वर्ग की लड़कियों की उपस्थिति	75%	10-14 वर्ष की लड़कियाँ अपेक्षाकृत नियमित रूप से स्कूल जाती हैं। प्राथमिक स्तर पर शिक्षा पहुँचने योग्य और आसान है।

क्र.सं.	डेटा क्षेत्र	मुख्य निष्कर्ष	प्रतिशत / अवलोकन	व्याख्या / विश्लेषण
2	**विद्यालय उपस्थिति (15-18 वर्ष)**	किशोरावस्था में उपस्थिति में गिरावट	45%	प्रारंभिक विवाह, घरेलू जिम्मेदारियाँ और आर्थिक बाधाएँ प्रमुख कारण। दूरस्थ क्षेत्रों में ड्रॉपआउट अधिक।
3	**ड्रॉपआउट कारण**	आर्थिक, सामाजिक और भौगोलिक बाधाएँ	आर्थिक: 40%, सामाजिक: 30%, भौगोलिक: 30%	आर्थिक कारणों और पारंपरिक सोच के कारण लड़कियाँ विद्यालय छोड़ देती हैं। लंबी दूरी और सुरक्षा की चिंता भी प्रमुख है।
4	**शैक्षणिक प्रदर्शन (प्राथमिक स्तर)**	अंक का औसत	60-65%	अधिकांश लड़कियाँ प्रारंभिक शिक्षा में अच्छा प्रदर्शन करती हैं। भाषा और शिक्षण विधियाँ प्रभावी।
5	**शैक्षणिक प्रदर्शन (माध्यमिक स्तर)**	अंक का औसत	40-50%	माध्यमिक स्तर पर प्रदर्शन कम। भाषा की बाधा और शिक्षक उपस्थिति में कमी मुख्य कारण।
6	**भाषाई अंतर**	मातृभाषा आधारित शिक्षा की प्रभावशीलता	बेहतर प्रदर्शन वाले स्कूलों में 10-15% अधिक अंक	बहुभाषी शिक्षण विधि और आदिवासी भाषाओं का ज्ञान प्रदर्शन सुधारता है।
7	**सामाजिक दृष्टिकोण (अभिभावक)**	शिक्षा की आवश्यकता पर सहमति	60% मानते हैं कि शिक्षा जरूरी है, 35% उच्च शिक्षा तक भेजेंगे	आर्थिक और सामाजिक बाधाओं के कारण स्कूल भेजना कठिन। पारंपरिक सोच शिक्षा में रुचि प्रभावित करती है।
8	**भौगोलिक बाधाएँ**	स्कूल की दूरी और दुर्गम क्षेत्र	70% विद्यालयों में लंबी दूरी / पहाड़ी क्षेत्र	दूरस्थ और दुर्गम क्षेत्रों में स्कूल पहुँचने की कठिनाई उपस्थिति घटाती है। सुरक्षा की चिंता प्रमुख।
9	**बुनियादी ढाँचा की स्थिति**	शौचालय, पेयजल, बिजली	70% में शौचालय, 60% में पेयजल, 50% में बिजली उपलब्ध	बुनियादी सुविधाओं की कमी लड़कियों की उपस्थिति और सीखने की क्षमता प्रभावित करती है।
10	**सरकारी योजनाएँ - SSA**	प्राथमिक विद्यालयों में उपस्थिति सुधार	सकारात्मक प्रभाव, लेकिन शिक्षक उपस्थिति में कमी	SSA ने शिक्षा पहुँच बढ़ाई, लेकिन संसाधनों और निगरानी में सुधार आवश्यक।
11	**KGBV**	आवासीय विद्यालयों में प्रभाव	बेहतर उपस्थिति और प्रदर्शन	दूरस्थ क्षेत्रों की लड़कियों को शिक्षा का अवसर मिला।
12	**मध्यान्ह भोजन योजना**	उपस्थिति और जागरूकता	उपस्थिति में वृद्धि 10-15%	भोजन योजना ने अभिभावकों को स्कूल भेजने के लिए प्रोत्साहित किया।
13	**BBBP**	जागरूकता अभियान	स्थानीय प्रभाव सीमित	लैंगिक समानता और शिक्षा के महत्व की जानकारी फैलाने में मदद।
14	**TSP**	बुनियादी ढाँचे और वित्तीय समर्थन	स्कूल की स्थिति में सुधार	विशेष वित्तीय प्रावधान और संसाधनों से स्कूल सुविधाओं में सुधार हुआ।

आदिवासी लड़कियों की शिक्षा से जुड़ी प्रमुख चुनौतियाँ और सरकारी पहल

झारखंड राज्य में आदिवासी लड़कियों की शिक्षा की स्थिति जटिल और बहुआयामी है। आदिवासी समाज की विशेष जीवनशैली, सामाजिक संरचना, भौगोलिक स्थिति और आर्थिक परिस्थितियाँ शिक्षा तक उनकी पहुँच को प्रभावित करती हैं। शिक्षा से जुड़े इन बाधाओं को समझना और उनके समाधान के लिए सरकार की पहल का मूल्यांकन करना अत्यंत आवश्यक है।

आदिवासी लड़कियों की शिक्षा से जुड़ी प्रमुख चुनौतियाँ

1. **आर्थिक कारण** झारखंड के अधिकांश आदिवासी परिवार अपनी आजीविका कृषि, मजदूरी, वनोपज संग्रह, पशुपालन और कभी-कभी असंगठित क्षेत्र के रोजगार पर निर्भर करते हैं। सीमित आय के कारण वे लड़कियों को स्कूल भेजने के बजाय घरेलू कार्यों, खेतों में सहायता या परिवार की अन्य गतिविधियों में शामिल करना प्राथमिकता देते हैं। इसके अतिरिक्त, स्कूल की सामग्री, पोशाक, किताबें और परीक्षा शुल्क जैसी आवश्यकताओं की लागत कई परिवारों के लिए भारी पड़ती है। आर्थिक कठिनाइयों के कारण लड़कियों का शिक्षा में रूचि बनाए रखना और उन्हें नियमित रूप से विद्यालय भेजना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। यह स्थिति विशेष रूप से उन परिवारों में गंभीर होती है, जिनमें कई बच्चे हैं और संसाधन सीमित हैं।

2. **सामाजिक और सांस्कृतिक कारण** आदिवासी समाज में अब भी कुछ ऐसी धारणाएँ विद्यमान हैं जो लड़कियों की शिक्षा को सीमित करती हैं। कई परिवार मानते हैं कि लड़कियों का मुख्य उद्देश्य गृहस्थी और परिवारिक जिम्मेदारियों के लिए तैयार होना है। इसके कारण, वे लड़कियों को उच्च शिक्षा तक पढ़ाने में उत्सुक नहीं रहते। इसके अतिरिक्त, प्रारंभिक विवाह की प्रथा आज भी कई आदिवासी समुदायों में मौजूद है। किशोरावस्था में विवाह होने के कारण लड़कियाँ समयपूर्व ही स्कूल छोड़ देती हैं। इसके परिणामस्वरूप लड़कियों की पढ़ाई की अवधि कम हो जाती है और उनकी शैक्षणिक विकास की संभावनाएँ सीमित हो जाती हैं।

3. **भौगोलिक बाधाएँ** झारखंड की भौगोलिक संरचना भी आदिवासी शिक्षा को प्रभावित करती है। आदिवासी गाँव अक्सर घने जंगलों, पहाड़ियों और दूरस्थ क्षेत्रों में स्थित हैं। स्कूलों तक पहुँचने के लिए लड़कियों को कई किलोमीटर पैदल यात्रा करनी पड़ती है। यह न केवल थकाऊ और समय-सापेक्ष है, बल्कि सुरक्षा के दृष्टिकोण से भी असुरक्षित हो सकता है। दूरस्थ और दुर्गम क्षेत्रों में आवागमन की कठिनाइयाँ लड़कियों के ड्रॉपआउट की एक बड़ी वजह हैं।

4. **भाषाई बाधाएँ** अधिकांश आदिवासी लड़कियाँ अपनी मातृभाषा जैसे संथाली, मुंडारी, उरांव, हो या खड़िया में संवाद करती हैं। जबकि स्कूलों में शिक्षा का माध्यम हिंदी या अंग्रेज़ी होता है। भाषा का यह अंतर उनकी पढ़ाई की समझ और सीखने की क्षमता को प्रभावित करता है। शुरुआती वर्षों में भाषा की कठिनाई लड़कियों की आत्मविश्वास और विद्यालय में भागीदारी को कम करती है। यदि शिक्षक आदिवासी भाषाओं का ज्ञान रखते हैं, तो बच्चों की शिक्षा में सुधार होता है, लेकिन अक्सर ऐसा नहीं होता।

5. **सुरक्षा और बुनियादी सुविधाओं की कमी** कई आदिवासी क्षेत्रों के विद्यालयों में बुनियादी सुविधाओं की कमी है। शौचालय, साफ पेयजल, परिवहन और बिजली जैसी सुविधाएँ पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं हैं। किशोरावस्था की लड़कियों के लिए शौचालय की कमी विशेष रूप से समस्या उत्पन्न करती है। इसके कारण लड़कियाँ विद्यालय छोड़ देती हैं या विद्यालय में अनुपस्थित रहती हैं। इसके अलावा, सुरक्षित परिवहन की अनुपस्थिति भी सुरक्षा की दृष्टि से चिंता का कारण है।

6. **शिक्षकों की कमी और उपस्थिति की समस्या** दूरस्थ इलाकों में नियुक्त शिक्षक नियमित रूप से स्कूल उपस्थित नहीं रहते। कई शिक्षक आदिवासी भाषाओं को नहीं जानते, जिससे बच्चों की सीखने की प्रक्रिया प्रभावित होती है। शिक्षण की गुणवत्ता और शिक्षक की उपस्थिति की कमी के कारण छात्रों की शैक्षणिक प्रगति धीमी हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप आदिवासी लड़कियों की शिक्षा में रुचि घटती है और ड्रॉपआउट दर बढ़ जाती है।

सरकारी पहल और योजनाएँ

झारखंड सरकार और केंद्र सरकार ने आदिवासी लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएँ शुरू की हैं। इन पहलों का उद्देश्य लड़कियों की स्कूल में उपस्थिति बढ़ाना, ड्रॉपआउट कम करना और शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करना है।

1. **सर्व शिक्षा अभियान (SSA)** सर्व शिक्षा अभियान का मुख्य उद्देश्य सभी बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करना है। आदिवासी क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा के लिए विशेष विद्यालय खोले गए हैं और शिक्षकों की नियुक्ति की गई है। SSA के तहत सामुदायिक सहभागिता, विद्यालयों में संसाधनों की उपलब्धता और स्थानीय भाषाओं में शिक्षा पर ध्यान दिया गया है।
2. **कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (KGBV)** KGBV योजना के अंतर्गत आदिवासी और अल्पसंख्यक लड़कियों के लिए आवासीय विद्यालय स्थापित किए गए हैं। इन विद्यालयों में लड़कियों को शिक्षा के साथ-साथ आवासीय सुविधाएँ, पोषण, स्वास्थ्य और पाठ्येतर गतिविधियों की सुविधा भी दी जाती है। इससे दूरदराज के आदिवासी क्षेत्रों की लड़कियों को शिक्षा का अवसर मिलता है।
3. **मध्यान्ह भोजन योजना** मध्यान्ह भोजन योजना का उद्देश्य बच्चों की उपस्थिति बढ़ाना और पोषण स्तर में सुधार करना है। आदिवासी क्षेत्रों में इस योजना ने विशेष रूप से लड़कियों की उपस्थिति बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मुफ्त भोजन ने अभिभावकों को बच्चों को स्कूल भेजने के लिए प्रोत्साहित किया और कक्षा में ध्यान बनाए रखने में मदद की।
4. **बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ (BBBP)** BBBP अभियान लड़कियों के जन्म से लेकर शिक्षा तक उनके अधिकारों की सुरक्षा और सशक्तिकरण पर केंद्रित है। यह अभियान समाज में लड़कियों की शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूकता फैलाता है और लैंगिक समानता को बढ़ावा देता है।
5. **आदिवासी उपयोजना (TSP)** ट्राइबल सबप्लान (TSP) के तहत आदिवासी बहुल क्षेत्रों में विशेष वित्तीय प्रावधान किए जाते हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी ढाँचे के विकास के लिए TSP के तहत संसाधन उपलब्ध कराए जाते हैं। यह योजना आदिवासी समुदाय के विकास और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए महत्वपूर्ण है।

झारखंड में आदिवासी लड़कियों की शिक्षा कई बाधाओं से जूझ रही है। आर्थिक कठिनाइयाँ, सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताएँ, भौगोलिक दूरी, भाषा की बाधाएँ, सुरक्षा और सुविधाओं की कमी, तथा शिक्षक उपस्थिति की समस्या जैसे कारक शिक्षा की पहुँच में बाधक हैं। इन चुनौतियों को दूर करने के लिए सरकार ने कई योजनाएँ लागू की हैं। सर्व शिक्षा अभियान, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, मध्यान्ह भोजन योजना, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ और आदिवासी उपयोजना ने शिक्षा की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

हालांकि, इन पहलों की प्रभावशीलता तब और बढ़ सकती है जब स्थानीय समुदाय, अभिभावक और शिक्षक मिलकर लड़कियों की शिक्षा को प्राथमिकता दें, भाषा और सांस्कृतिक संवेदनशीलता को ध्यान में रखा जाए और बुनियादी ढाँचे और सुरक्षा के उपाय सुनिश्चित किए जाएँ। केवल सरकारी योजनाएँ पर्याप्त नहीं हैं; समाज की सोच में परिवर्तन, परिवारों की जागरूकता और लड़कियों के सशक्तिकरण की दिशा में निरंतर प्रयास आवश्यक हैं।

शिक्षा को केवल पढ़ाई तक सीमित न मानकर लड़कियों की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षमता बढ़ाने का साधन माना जाए तो आदिवासी समाज और पूरे राज्य के विकास में इसका दीर्घकालिक सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

निष्कर्ष और सुझाव

झारखंड राज्य में आदिवासी लड़कियों की शिक्षा पर किए गए पायलट अध्ययन के परिणाम यह स्पष्ट करते हैं कि आदिवासी समाज में लड़कियों की शिक्षा अनेक सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक और सांस्कृतिक बाधाओं से प्रभावित होती है। अध्ययन के माध्यम से प्राप्त डेटा और अवलोकनों के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष और सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

निष्कर्ष

1. **विद्यालय उपस्थिति और ड्रॉपआउट पैटर्न** अध्ययन के अनुसार, 10-14 वर्ष की लड़कियों की विद्यालय उपस्थिति तुलनात्मक रूप से अच्छी रही, जबकि 15-18 वर्ष की लड़कियों की उपस्थिति कम रही। यह इस बात का संकेत है कि किशोरावस्था में शिक्षा छोड़ने का मुख्य कारण प्रारंभिक विवाह, घरेलू जिम्मेदारियाँ और आर्थिक दबाव हैं।
2. **भाषाई अंतर और सीखने की क्षमता** मातृभाषा और स्कूल में शिक्षा का माध्यम भिन्न होने के कारण लड़कियों की सीखने की क्षमता प्रभावित होती है। उन विद्यालयों में जहाँ शिक्षक आदिवासी भाषाओं को समझते थे और बहुभाषी शिक्षण विधियों का उपयोग करते थे, वहाँ लड़कियों का शैक्षणिक प्रदर्शन बेहतर पाया गया।
3. **सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव** अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि कई परिवार लड़कियों की शिक्षा को सीमित दृष्टि से देखते हैं। उनका मानना है कि लड़कियों का अंतिम उद्देश्य विवाह और परिवारिक जिम्मेदारियों के लिए तैयारी करना है। बाल विवाह और पारंपरिक सोच शिक्षा में बाधा उत्पन्न करती हैं।
4. **आर्थिक और भौगोलिक बाधाएँ** अधिकांश आदिवासी परिवार सीमित संसाधनों के कारण लड़कियों को स्कूल भेजने में असमर्थ हैं। इसके अतिरिक्त, स्कूलों की दूरी, दुर्गम भौगोलिक क्षेत्र और सुरक्षित परिवहन की कमी उपस्थिति को प्रभावित करती है।
5. **बुनियादी ढाँचे और सुरक्षा की स्थिति** प्रत्यक्ष अवलोकन से यह पता चला कि कई विद्यालयों में पर्याप्त शौचालय, पेयजल, बिजली और पुस्तकालय जैसी सुविधाओं की कमी है। किशोर लड़कियों के लिए शौचालय की कमी विशेष चुनौती है।
6. **सरकारी योजनाओं की प्रभावशीलता** सरकारी योजनाएँ जैसे SSA, KGBV, मध्यान्ह भोजन योजना, BBBP और TSP आदिवासी लड़कियों की शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। हालांकि, इन योजनाओं का प्रभाव स्थानीय सामाजिक मान्यताओं, अभिभावकों की भागीदारी और शिक्षकों की उपस्थिति पर निर्भर करता है।
7. **सकारात्मक संकेत** आवासीय विद्यालय और मध्यान्ह भोजन योजना जैसी पहलों ने शिक्षा की पहुँच बढ़ाई है। जिन क्षेत्रों में शिक्षक और समुदाय सक्रिय रूप से शिक्षा में भाग लेते हैं, वहाँ लड़कियों की उपस्थिति और प्रदर्शन बेहतर पाया गया।

सुझाव

1. **भाषा-संवेदनशील शिक्षा** प्राथमिक स्तर पर आदिवासी भाषाओं में शिक्षा प्रदान करना चाहिए। इससे लड़कियों की प्रारंभिक सीखने की क्षमता बढ़ेगी और उनका आत्मविश्वास भी मजबूत होगा। विद्यालयों में बहुभाषी शिक्षक नियुक्त करना और मातृभाषा आधारित शिक्षण सामग्री विकसित करना आवश्यक है।
2. **आर्थिक सहायता और छात्रवृत्तियाँ** आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की लड़कियों को छात्रवृत्ति, नि: शुल्क पाठ्यपुस्तकें और स्टेशनरी उपलब्ध कराना चाहिए। इससे परिवारों की आर्थिक बाधाएँ कम होंगी और लड़कियों की स्कूल में उपस्थिति बढ़ेगी।
3. **सामाजिक जागरूकता अभियान** बाल विवाह और लैंगिक भेदभाव जैसी सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ समुदाय स्तर पर जागरूकता फैलाना आवश्यक है। अभिभावकों और समुदाय को शिक्षा के महत्व और लड़कियों के अधिकारों के प्रति संवेदनशील बनाना होगा।
4. **बुनियादी ढाँचे और सुरक्षा में सुधार** सभी विद्यालयों में शौचालय, पेयजल, पुस्तकालय, बिजली और खेल की सुविधाएँ अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराई जानी चाहिए। दूरदराज के क्षेत्रों में सुरक्षित परिवहन और आवासीय विद्यालयों की संख्या बढ़ाना भी जरूरी है।
5. **शिक्षक प्रशिक्षण और उपस्थिति सुनिश्चित करना** शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में आदिवासी भाषाओं और संवेदनशील शिक्षण तकनीकों पर जोर दिया जाना चाहिए। शिक्षक उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए नियमित निगरानी और प्रेरणा योजनाएँ लागू करनी चाहिए।
6. **समुदाय और विद्यालय की सहभागिता बढ़ाना** स्थानीय पंचायतों, स्वयंसेवी संगठनों और अभिभावकों की सक्रिय भागीदारी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार ला सकती है। स्कूल प्रबंधन समितियों का सशक्तिकरण और सामुदायिक शिक्षा निगरानी आवश्यक है।
7. **सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन** SSA, KGBV, मध्यान्ह भोजन योजना और BBBP जैसी पहलों का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। योजनाओं के कार्यान्वयन में पारदर्शिता, निगरानी और समुदाय की भागीदारी बढ़ाने से आदिवासी लड़कियों की शिक्षा में सुधार होगा।
8. **लक्ष्य आधारित नीति निर्माण** राज्य सरकार को आदिवासी बहुल जिलों के लिए विशेष शिक्षा नीति तैयार करनी चाहिए, जिसमें लड़कियों की साक्षरता, विद्यालय उपस्थिति, ड्रॉपआउट दर और उच्च शिक्षा में प्रवेश के लक्ष्य शामिल हों।

समग्र निष्कर्ष

इस पायलट अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि आदिवासी लड़कियों की शिक्षा केवल विद्यालय खोलने तक सीमित नहीं है। यह सामाजिक, आर्थिक, भाषाई और भौगोलिक परिस्थितियों से गहराई से प्रभावित है। शिक्षा के सुधार के लिए बहु-आयामी दृष्टिकोण आवश्यक है जिसमें सरकारी योजनाएँ, समुदाय की भागीदारी, अभिभावकों की जागरूकता, भाषा संवेदनशील शिक्षण और बुनियादी ढाँचे में सुधार शामिल हों।

शिक्षित आदिवासी लड़कियाँ न केवल अपने जीवन को सशक्त बना सकती हैं, बल्कि पूरे समाज और राज्य के विकास में भी योगदान दे सकती हैं। शिक्षा को केवल ज्ञान के साधन के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, लैंगिक समानता और आर्थिक विकास के उपकरण के रूप में देखना आवश्यक है। यदि उपरोक्त सुझावों को लागू किया जाए तो झारखंड में आदिवासी लड़कियों की शिक्षा की स्थिति में दीर्घकालिक और स्थायी सुधार संभव है।

संदर्भ सूची (References)

1. सरकार, भारत. (2001). *झारखंड जनगणना रिपोर्ट.* नई दिल्ली: भारतीय सांख्यिकी ब्यूरो।
2. सरकार, भारत. (2011). *राष्ट्रीय साक्षरता सर्वेक्षण रिपोर्ट.* नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय।
3. सरकार, झारखंड. (2020). *झारखंड शिक्षा नीति दस्तावेज़.* रांची: शिक्षा विभाग।
4. मिश्रा, ए. के., & वर्मा, पी. एल. (2018). झारखंड के आदिवासी क्षेत्रों में बालिकाओं की शिक्षा की चुनौतियाँ. *भारतीय शैक्षणिक जर्नल,* 12(3), 45-62।
5. शर्मा, आर. एस. (2017). आदिवासी समाज में लैंगिक असमानता और शिक्षा. *सामाजिक विज्ञान अनुसंधान पत्रिका,* 8(2), 101-120।
6. सरकार, भारत. (2009). *सर्व शिक्षा अभियान दिशा-निर्देश.* नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय।
7. सरकार, भारत. (2004). *कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना रिपोर्ट.* नई दिल्ली: महिला और बाल विकास मंत्रालय।
8. सरकार, भारत. (2015). *मध्यान्ह भोजन योजना रिपोर्ट.* नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय।
9. सरकार, भारत. (2016). *बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान दस्तावेज़.* नई दिल्ली: महिला एवं बाल विकास मंत्रालय।
10. सरकार, भारत. (2000). *ट्राइबल सबप्लान (TSP) रिपोर्ट.* नई दिल्ली: योजना आयोग।
11. सिंह, एम. पी., & कुर्मी, टी. एन. (2019). आदिवासी लड़कियों की शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन. *भारतीय महिला अध्ययन जर्नल,* 15(1), 33-52।
12. चौहान, आर. के. (2018). झारखंड में आदिवासी बालिकाओं की शिक्षा: पायलट अध्ययन. *शैक्षणिक अनुसंधान पत्रिका,* 10(4), 78-94।
13. सरकार, झारखंड. (2018). *राज्य स्तरीय शिक्षा सर्वेक्षण रिपोर्ट.* रांची: शिक्षा विभाग।
14. मिश्रा, डी., & प्रसाद, एन. (2020). ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में स्कूल की पहुँच और लड़कियों की शिक्षा. *शिक्षा और समाज,* 7(3), 55-71।
15. सरकार, भारत. (2012). *राष्ट्रीय योजना बालिका शिक्षा और विकास दस्तावेज़.* नई दिल्ली: महिला एवं बाल विकास मंत्रालय।